॥ ऊँ ह्रीं श्री कल्याण पार्श्वनाथ स्वामिने नमः ॥

॥ श्री आत्म-वल्लभ-समुद्र-इन्द्रदिन्न-रत्नाकर सूरीश्वर सद्गुरूभ्यो नमः ॥

॥ वर्तमान पट्टधर गच्छाधिपति श्रुतभास्कर आचार्य श्रीमद् धर्मधुरन्धर सूरीश्वर सद्गुरवे नमः ॥

भगवान महावीर स्वामी जी के 2550वें निर्वाण कल्याणक निमित्ते (भाग-3)

घर घर पाठशाला

17-30 साल के बालक बालिकाओं के लिए

शुभ आशीर्वाद प्रदाता

गुरू आत्म-वल्लभ-समुद्र-इन्द्रदिन्न-रत्नाकर सूरि म.सा. के पट्टधर वर्तमान गच्छाधिपति श्रुतभास्कर, सरस्वती उपासक, श्रुतज्ञान मंदिर संरक्षक, आत्मकुल दिवाकर, शेरे गुजरांवाला

जैनाचार्य श्रीमद् विजय धर्मधुरन्धर सूरीश्वर जी म.सा.

सद्प्रेरणा : गणिवर्य श्री धर्मरत्न विजय जी म.सा.

शुभ निश्रा प्रदाता : प.पू प्रर्वतनी साध्वी श्री अभय श्री जी म.सा. की सुशिष्या

साध्वी श्री कल्पज्ञा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-6

आयोजक : भगवान श्री कल्याण पार्श्वनाथ जैन नवयुवक मण्डल, लुधियाना

संचालन समिति : श्री कल्याण पार्श्वनाथ जैन मन्दिर , किचलू नगर, लुधियाना

निवेदक : श्री आत्मानन्द जैन सभा (रजि.) लुधियाना

नवकार मंत्र

नमो अरिहंताणं

अरिहंत भगवंतों को नमस्कार हो।

नमो सिद्धाणं

सिद्ध भगवंतों को नमस्कार हो।

नमो आयरियाणं

आचार्य महाराजों को नमस्कार हो।

नमो उवज्झायाणं

उपाध्याय महाराजों को नमस्कार हो।

नमो लोए सव्वसाहूणं

लोक में विद्यमान सब साधु महाराज को नमस्कार हो।

एसो पंच-नमुक्कारो

इन पांचों को किया हुआ नमस्कार

सव्व-पावप्पणासणो

सर्व पापों का नाश करने वाला है।

मंगलाणं च सव्वेसिं

और सब मंगलों में,

पढमं हवइ मंगलं

यह प्रथम अर्थात् श्रेष्ठ मंगल है।

गुरु स्तुति

भवोदधि-तारणपोत, मात त्रिशलासुत वंदो ।
हे जी, तपागच्छ- श्रीकार, पाट वंदी आणंदो ।।

परतिख शारदपूत, आतमानंद सूरिरायो।
हे जी, मिथ्यामत परिहार, शुद्ध मारग अपनायो ।।

युगद्रष्टा कोहिनूर, विजय वल्लभ सूरिराजे ।
हे जी, जिनआणाप्रतिबद्ध, सुजस महीतल गाजे ।।

निर्मल निश्चल संत, समुद्र सूरि जग सोहे ।
हे जी, समता साधक गुरुराय, मुक्ति-सोपान आरोहे ।।

क्षत्रियकुल-प्रतिबोध, वीर वाणी प्रसरावे ।
हे जी, इन्द्रदिन्न सूरिदेव, जयकमला जग पावे ।।

तस पट्टे केसरी सिंह, रत्नाकर सूरि प्रतापी ।
हे जी, प्रखर संयम तपतेज, शिथिलता थर-थर कांपी ।।

संप्रति धर्मधुरंधर, चउविहसंघ धुरा-धोरी ।
हे जी, जयवंत सुधर्मापाट, 'आशिष' मांगे कर जोरी।।

तीर्थंकर को पहचानों
Know Our Trthankar

तीर्थंकर कौन हैं

- तीर्थंकर धर्म बताने वाले आध्यात्मिक गुरू हैं
- तीर्थंकर हमें मोक्ष का मार्ग बताते हैं।
- तीर्थंकर साधु-साध्वी-श्रावक-श्राविका रूपी तीर्थ के संस्थापक हैं

वीतरागी (Vitraagi)

- तीर्थंकर की प्रतिमा क्रूर नहीं होती, शांत होती है।
- तीर्थंकर शस्त्र नहीं रखते।
- तीर्थंकर राग-द्वेष मुक्त होते हैं
- तीर्थंकर की प्रतिमा के साथ कभी कोई स्त्री नहीं होती।

केवलज्ञानी (Kevalgyani)

- तीर्थंकर को दुनिया में प्रत्येक वस्तु का ज्ञान होता है।
- तीर्थंकर को भूतकाल, वर्तमान काल और भविष्य काल का संपूर्ण ज्ञान होता है।

मूर्ति (Idol)

- तीर्थंकर की मूर्ति मुख्यत: पदमासन और काउसग्ग मुद्राओं में होती है।
- तीर्थंकर की मूर्ति के साथ परिवार भी होता है।
- उनकी मूर्ति को लंछन से पहचान सकते हैं।
- सभी तीर्थंकरों के लंछन भिन्न होते हैं।

अष्ट प्रतिहार्य (8 Pratiharya)

जैन साधु का जीवन

घर (House)

- जैन साधुओं का अपना स्थायी घर नहीं होता। वे उपाश्रय में रहते हैं।

भोजन (Food)

- जैन साधु खाना नहीं बनाते, वे गोचरी के लिए घर घर जाते हैं।
- वे उबाला हुआ पानी पीते हैं।
- वे सूर्योदय के पहले और सूर्यास्त के बाद नहीं खाते पीते
- वे भोजन के लिए लकड़ी से बने बर्तन (पात्रा) का उपयोग करते हैं।

वस्त्र (Cloths)

- जैन साधु बिना सिलाई वाले साफ कपड़े पहनते हैं।
- वे रजोहरण (ओघा) से छोटे जीवों को बचाते हैं।
- वे बोलते समय मुंहपत्ति का उपयोग करते हैं।
- वे संथारा और उत्तरपट्टा पर सोते हैं।
- वे अपने बालों को लोच करके निकालते हैं।

Life Style of Jain Sadhu

Travel

- जैन साधु एक जगह से दूसरी जगह पैदल चलकर जाते हैं। उसे विहार कहते हैं।
- वे कभी कोई वाहन जैसे कि गाड़ी, बस, रेलगाड़ी आदि का उपयोग नहीं करते ।
- वे बारिश के मौसम (चातुर्मास) में जीव रक्षा हेतु एक जगह पर ही रहते हैं ।

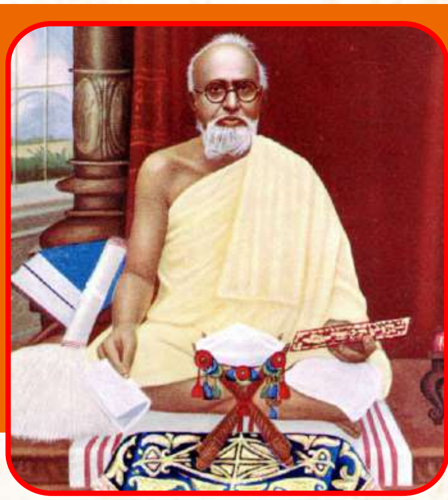

Life

- जैन साधु सुबह जल्दी उठते हैं और भगवान महावीर के बताए हुए मार्ग पर चलते हैं।
- वे धार्मिक पुस्तकें पढ़ते हैं ।
- उनमें प्रेम, करूणा और पवित्रता होती है।
- वे प्रवचन देते हैं और हमें अच्छी-अच्छी बातें सिखाते हैं।

14 स्वप्न

च्यवन कल्याणक के समय तीर्थंकर की माता 14 शुभ स्वप्न देखती है

14 स्वप्न
14 Auspicious Dreams

1

गजराज
Elephant

2

वृषभ (Bull)

3

केसरी सिंह
Lion

4

लक्ष्मी माता
Goddess Laxmi

5

फूलों की माला
Garland of Flowers

6

चंद्र (Full Moon)

7

सूर्य (Sun)

14 स्वप्न

च्यवन कल्याणक के समय तीर्थंकर की माता 14 शुभ स्वप्न देखती है

14 स्वप्न
14 Auspicious Dreams

8

ध्वज
Dhwaj

9

पूर्ण कलश
(Purna Kalash)

10

पद्म सरोवर
Padma Sarowar

11

रत्नाकर
Ratnakar

12

देव विमान
Dev Viman

13

रत्नराशि
(Heap of Gems)

14

अग्निशिखा
(Agni Shikha)

अष्टमंगल

8 शुभ प्रतीकों
का समूह है

1

दर्पण
Mirror

2

भद्रासन
(Throne)

3

वर्धमानक
Vardhamanak

4

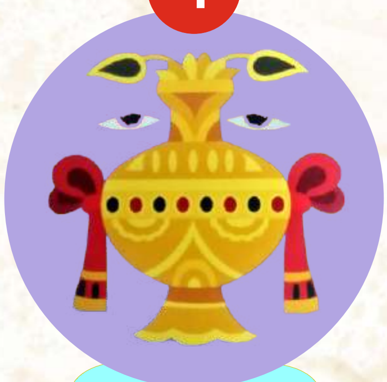

कलश
Kalash

5

मीन युगल
Pair of Fish

6

श्रीवत्स
(Shrivatsa)

7

स्वस्तिक
(Swastik)

8

नंदावर्त
(Nandavarta)

प्रदक्षिणा के दोहे
Pradakshina Ke Dohe

काल अनादि अनंत मे, भव भ्रमण नो नहीं पार
ए भव भ्रमण निवारवा, प्रदक्षिणा देऊं त्रण बार ॥

भमतिमां भमता थकां, भव भावठ दूर पलाय
दर्शन-ज्ञान-चरित्र रूप,प्रदक्षिणा त्रण देवाय ॥

दर्शन-ज्ञान-चरित्र ए, रत्नत्रयी शिवद्वार
त्रण प्रदक्षिणा ते कारणे भवदुःख भंजनहार ॥

पूजा के प्रकार
Types of Puja

अंग पूजा
जो पूजा भगवान को स्पर्श करके होती है

अग्र पूजा
जो पूजा भगवान को बिना स्पर्श किए (सामने रहकर) की जाती है

2. भाव पूजा
भाव पूजा द्रव्य पूजा के बाद की जाती है और वह भावों की शुद्धता में वृद्धि कराती है। भाव पूजा में चैत्यवंदन, स्तुति, स्तवन आदि का समावेश होता है।

दर्शनविधि

1.

नमो जिणाणं

जब जिन मन्दिर, शिखर या ध्वजा दिखे तब दोनों हाथ जोड़कर मस्तक झुकाकर 'नमो जिणाणं' बोलें।

2.

पहली निसीहि

जिन मंदिर के मुख्य दरवाजे में प्रवेश करते समय 'निसीहि' बोलें और फिर घर के विचार ना करें

3.

नमो जिणाणं

भगवान के दर्शन होने पर मस्तक झुकाकर 'नमो जिणाणं' बोलें।

नमो जिणाणं
नमो जिणाणं
नमो जिणाणं

दर्शनविधि

7. द्रव्य पूजा

हमें प्रभुजी के सामने धूप-दीपक
पंखा, दर्पण और चामर
करना चाहिए।

8. तीसरी निसीहि

चैत्यवंदन करने
से पहले तीसरी
निसीहि बोलें।

9. पच्चक्खाण

हमें यथाशक्ति पच्चक्खाण
लेना चाहिए।

दर्शनविधि

10.

भंडार

भंडार में पैसे भरें

11.

घंटनाद

घंटनाद करके प्रभुजी की ओर पीठ ना करके मंदिर जी से बाहर निकलें

12.

आवस्सही

बाहर निकलते समय मंदिरजी के मुख्य दरवाजे पर ‘आवस्सही तीन बार बोलना चाहिए।

जीवों के प्रकार
Types of Living Beings

जिन जीवों को एक इन्द्रिय होती है (स्पर्शनेन्द्रिय)

एकेन्द्रिय जीव
One Sensed Beings

पृथ्वीकाय (पृथ्वी शरीर वाले जीव)
Earth Bodied Beings

अपकाय (जल शरीर वाले जीव)
Water Bodied beings

तेउकाय (अग्नि शरीर वाले जीव)
Fire Bodied Beings

वाउकाय (वायु शरीर वाले जीव)
Air Bodied Beings

वनस्पतिकाय (पौध शरीर वाले जीव)
Plant Bodied Beings

बेइन्द्रिय जीव
Two Sensed Beings

जिन जीवों को
दो इन्द्रिय होती है
(स्पर्शनेन्द्रिय
.रसनेन्द्रिय)

केंचुआ
Earthworms

शंख
Shankh

सीप
Shells

तेइन्द्रिय जीव
Three Sensed Beings

जिन जीवों को दो इन्द्रिय होती है (स्पर्शनेन्द्रिय ,रसनेन्द्रिय)

चींटी
Ants

खटमल
Bedbugs

धोंधा
Snail

चउरिन्द्रिय जीव
Four Sensed Beings

जिन जीवों को
दो इन्द्रिय होती है
(स्पर्शनेन्द्रिय
.रसनेन्द्रिय)

तितली
Butterfly

खटमल
Bedbugs

धोंधा
Snail

पंचेन्द्रिय जीव
Five Sensed Beings

जिन जीवों को
पांच इन्द्रिय होती है
(स्पर्शनेन्द्रिय+रसनेन्द्रिय
+घ्राणेन्द्रिय+चक्षुरिन्द्रिय
+क्षोत्रेन्द्रिय)

पशु
Animals

पक्षी
Birds

इंसान
Humans

नारक
Narak

देवता
Devtas

सिद्धचक
(Siddhachakra)

देव तत्व

नाम	वर्ण	गुण
अरहिन्त	सफेद	12
सिद्ध	लाल	8

गुरू तत्व

नाम	वर्ण	गुण
आचार्य	पीला	36
उपाध्याय	हरा	25
साधु	काला	27

धर्म तत्व

नाम	वर्ण	गुण
दर्शन	सफेद	67
ज्ञान	सफेद	51
चरित्र	सफेद	70
तप	सफेद	50

पंचपरमेष्ठि गुण

अरहिन्त		सिद्ध	आचार्य		उपाध्याय		साधु		कुल
12	+	8	36	+	25	+	27	=	108

चरित्र के उपकरण
Charitra Upkaran

साधु के उपकरण

ओघा

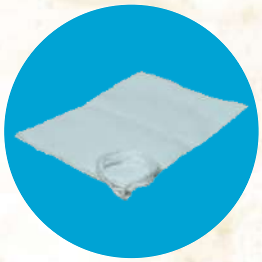
मुहपत्ति

पोथी सापड़ा

स्थापनाचार्य

पात्रा

घड़ा

तरपणी

चेतना

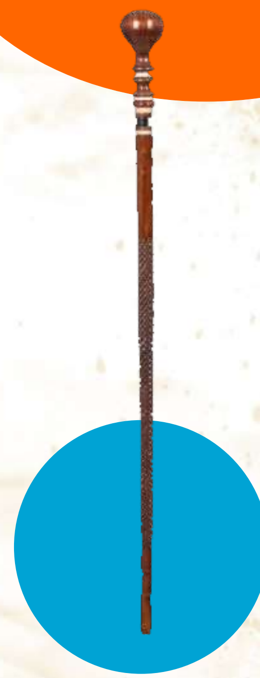
दंडा

बटवा

सूपड़ी-पूंजणी

पुस्तक

नवकारवाली

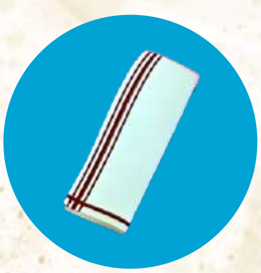
कामली

आसन

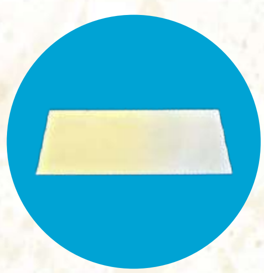
संथारा

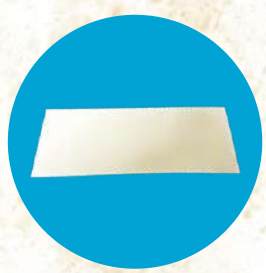
चोलपट्टा

दंडासन

श्रावक के उपकरण

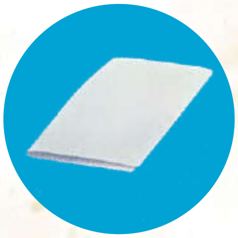

साधु के उपकरण

भाव-पूजा

खमासमण सूत्र

इच्छामि खमासमणो। वंदिउं जावणिज्जाए, निसीहिआए, मत्यएण वंदामि।

इरियावहियं सूत्र

इच्छाकारेण संदिसह भगवन इरियावहियं पडिक्कमामि इच्छं इच्छामि पडिक्कमिउं इच्छं। इच्छामि पडिक्कमिउं, इरियावहियाए विराहणाए गमणागमणे पाणक्कमणे, बीयक्कमणे, हरियक्कमणे, ओसा उत्तिंग पणग दगमट्टी मक्कडा संताणा-संकमणे। जे मे जीवा विराहिया, एगिंदिया, बेइंदिया, तेइंदिया, चउरिंदिया, पंचिदिया, अभिहया, वत्तिया, लेसिया, संघाइया, संघट्टिया, परियाविया, किलामिया, उद्दविया, ठाणाओ ठाणं संकामिया, जीवियाओ ववरोविया, तस्स मिच्छामि दुक्कडं॥

तस्स उत्तरी सूत्र

तस्स उत्तरी करणेणं, पायच्छित्त करणेणं, विसोही करणेणं, विसल्ली करणेणं, पावाणं कम्माणं निग्घाय णट्ठाए, ठामि काउस्सग्गं॥

अन्नत्थ (आगार) सूत्र

अन्नत्थ ऊससिएणं नीससिएणं, खासिएणं, छीएणं, जंभाइएणं, उड्डुएणं, वाय- निसग्गेणं, भमलीए पित्तमुच्छाए। सुहुमेहिं अंग संचालेहिं, सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं। एवमाइएहिं आगारेहिं अभग्गो अविराहिओ हुज्ज मे काउस्सग्गो। जाव अरिहंताणं भगवंताणं नमुक्कारेणं न पारेमि। ताव कायं, ठाणेणं, मोणेणं, झाणेणं, अप्पाणं वोसिरामि॥

(अन्नत्थ सूत्र पढ़ते हुए एक 'लोगस्स' का 'चंदेसु निम्मलयरा' तक या चार नवकार काउसग्ग करिये)

लोगस्स (नाम-स्तव) सूत्र

लोगस्स उज्जो अगरे, धम्मतित्थयरे जिणे।
अरिहंते कित्तइस्सं, चउवीसं पि केवली।। 1।।
उसभमजिअं च वंदे, संभवमभिणंदणं च सुमई च।
पउमप्पहं सुपासं जिणं च चंदप्पहं वंदे।। 2।।
सुविहिं च पुप्फदंतं, सीअल, सिज्जंस, वासुपुज्जं च
विमलमणंतं च जिणं, धम्मं संतिं च वंदामि।। 3।।
कुंथुं अरं च मल्लिं, वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च।
वंदामि रिट्ठनेमिं, पासं तह वद्धमाणं च।। 4।।
एवं मए अभिथुआ, विहुय रय-मला पहीण-जर मरणा।
चउवीसं पि जिणवरा, तित्थयरा मे पसीयंतु।। 5।।
कित्तिय वंदिय महिया, जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा।
आरुग्ग- बोहि-लाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु।। 6।।
चंदेसु निम्मलयरा, आइच्चेसु अहियं पयासयरा।
सागर वर गम्भीरा, सिद्धा सिद्धि मम दिसंतु।। 7।।
(फिर खमासमण दीजिए)

फिर 'नमो अरिहंताणं' कहते हुए काउसग्ग पार कर, प्रकट लोगस्स पढ़ें तथा खड़े रह कर निम्नलिखित पाठ पढ़िये-

खमासमण सूत्र

तदन्तर दोनों हाथ, दोनों घुटने तथा मस्तक भूमि पर टेक कर पंचांग प्रणाम करते हुए तीन खमासमण दीजिए।

इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए,
निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।
इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए,
निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।
इच्छामि खमासमणो! वंदिउं जावणिज्जाए,
निसीहिआए, मत्थएण वंदामि।

(चित्र में प्रदर्शित स्थिति के अनुसार दाहिने घुटने को जमीन पर टेक कर बायां घुटना सीधा खड़ा कीजिए, दोनों हाथ जोड़ कर दोनों हाथों की अंगुलियां 'योग मुद्रा' सहित बराबर एक-दूसरे हाथ की अंगुलियों के बीच-बीच में मिलाइये। दोनों अंगूठों को समान स्थिति में रखकर कुहनियां पेट से लगाकर बैठिये और कहिये)

इच्छाकारेण संदिसह भगवन! चैत्यवंदन करूं ? इच्छं।
अब पूर्वाचार्य कृत निम्नलिखित एक चैत्यवंदन पढ़िए।

चैत्यवंदन

सकल कुशल वल्ली, पुष्करावर्त्त मेघो, दुरित तिमिर भानुः, कल्प वृक्षोपमानः।

भव-जल-निधि-पोतः, सर्व-सम्पत्ति-हेतुः, स भवतु सततं वः
श्रेयसे शान्तिनाथः॥ श्रेयसे पार्श्वनाथः

॥ श्री तीर्थों का चैत्यवंदन ॥

आज देव अरिहंत नमूं, सिमरूं तारू नाम। जहां जहां प्रतिमा जिनतणी, तहां-तहां करूं प्रणाम।

शत्रुंजय श्री आदिदेव, नेम नमूं गिरनार। तारंगे श्री अजितनाथ, आबू ऋषभ जुहार ॥

अष्टापद गिरी ऊपरे, जिन चौबीसे जोय। मणिमय मूरति मानसुं भरत भरावी सोय ॥

सम्मेतशिखर तीर्थ बड़ो, जहां बीसे जिनपाय। वैभारिक गिरि ऊपरे, श्री वीर जिनेश्वर राय।

मांडवगढ़ नो राजियो, नामे देव सुपास। ऋषभ कहे जिन समरतां, पहुंचे मन की आस ॥

॥ जंकिंचि सूत्र ॥

जंकिंचि नाम तित्थं, सग्गे पायालि माणुसे लोए।
जाइं जिणबिंबाईं, ताइं सव्वाइं वंदामि ॥

नमुत्थुणं सूत्र

नमुत्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं, तित्थयराणं सयंसंबुद्धाणं।
पुरिसुत्तमांण, पुरिस सीहाणं, पुरिस वर पुंडरीआण,पुरिस वर गंध हत्थीणं।
लोगुत्तमाणं, लोग नाहाणं, लोग-हियाणं, लोग पईवाणं, लोग पज्जोअगराणं।
अभय-दयाणं, चक्खु दयाणं, मग्ग दयाणं, सरण दयाणं, बोहि दयाणं।
धम्म दयाणं, धम्म देसयाणं, धम्म नायगाणं, धम्म सारहीणं, धम्म वर चाउरंत चक्कवट्टीणं
अप्पडिहय वरनाण दंसणधराणं वियट्ट छउमाणं। जिणाणं जावयाणं
तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोअगाणं।
सव्वन्नूणं सव्व दरिसीणं, सिव मयल मरुअ, मणंत मक्खय
मव्वाबाह मपुणराविति्ति, सिद्धिगई नामधेयं, ठाणं संपत्ताणं
नमो जिणाणं जिअ भयाणं जे अ अईआ सिद्धा, जे अ भविसन्ति
णागए काले, संपइ अ वट्टमाणा, सव्वे तिविहेण वंदामि

भावार्थ: इस सूत्र द्वारा शक्रेन्द्र अरिहंत भगवान की उनके
सर्वश्रेष्ठ गुणों के वर्णन से स्तुति करते है।

जावंति चेइयाइं सूत्र

जावंति चेइयाइं, उड्ढे अ अहे अ तिरिअ-लोए अ,
सव्वाइं ताइं वंदे, इह संतो तत्थ संताइं
भावार्थ: इस सूत्र से तीनों लोक में स्थित सर्व जिन चौत्यों को
नमस्कार किया जाता है।

जावंत केवि साहू सूत्र

जावंत के वि साहू, भरहेरवय महाविदेहे अ,
सव्वेसिं तेसिं पणओ, तिविहेण तिदंड विरयाणं
भावार्थ:- इस सूत्र में सभी भरत, ऐरावत और महाविदेह क्षेत्र में स्थित
सर्व श्रमणों को नमस्कार किया जाता है।

पंच परमेष्ठि नमस्कार सूत्र

नमोर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधुभ्य
भावार्थ: श्री सिद्धसेन दिवाकर सूरि द्वारा –ष्टिवाद नामक पूर्व में से उघृत
इस सूत्र से श्री पंच परमेष्ठी को नमस्कार किया गया है।

उवसग्गहरं स्तोत्र

उवसग्गहरं पांस, पासं वंदामि, कम्म घण मुक्कं।
विसहर विस निन्नासं, मंगल कल्लाण आवासं।
विसहर फुलिंग मंतं कंठे धारेइ जो सया मणुओ।
तस्स गह रोग मारी, दुट्ठ जरा जंति उवसामं।
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहु फलो होइ।
नर तिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं।
तुह सम्मत्ते लद्धे,चिंतामणि कप्पप्पायव-ब्भहिए।
पावंति अविग्घेणं जीवा अयरामरं ठाणं
इअ संथुओ महायस भत्तिब्भर निब्भरेण हियऐण।
ता देव दिज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद
भावार्थ: श्री भद्रबाहु स्वामी द्वारा रचित इस सूत्र में सर्व विघ्नों को दूर करने वाले
श्री पार्श्वनाथ प्रभु के गुणों की स्तुति की गयी है।

जय वीयराय सूत्र

जय वीयराय जग गुरु होउ ममं तुह पभावओ भयवं
भव निव्वेओ, मग्गाणुसारिया इट्ठ फल सिद्धि
लोग विरुद्धच्चाओ गरुजण-पूआ
परत्थ करणं च, सुहगुरु जोगो
तव्वयण सेवणा, आभवमखंडा,
वारिज्जइ जइ वि नियाणं-बंधणं वीयराय! तुह समये
तहवि मम हज सेवा, भवे भवे तुम्ह चलणाणं
दुक्खक्खओ कम्मक्खओ
समाहि मरणं च बोहि लाभो अ
संपज्जऊ मह एअंतुह नाह पणाम करणेणं
सर्व मंगल मांगल्यं, सर्व कल्याण कारणम्
प्रधाणं सर्व धर्माणां, जैन जयति शासनम्

भावार्थ : इस सूत्र द्वारा प्रभु से आत्म कल्याण के लिए निर्दोष एंव उत्तम तेरह प्रार्थनायें की गयी है।

अरिहंत चेइयाणं सूत्र

अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं, वंदण-वत्तिआए, पूअण-वत्तिआए
सक्कार-वत्तिआए, सम्माण-वत्तिआए, बोहिलाभ-वत्तिआए।
निरुवसग्ग-वत्तिआए, सद्धाए, मेहाए, धीईए, धारणाए, अणुप्पेहाए
वड्ढमाणीए, ठामि काउस्सग्गं।

भावार्थ: इस सूत्र में जिन प्रतिमाओं की आराधना के लिए काउस्सग्ग करते समय की भावनाओं का वर्णन है।

कल्लाण कंदं

कल्लाणकंदं पढमं जिणिंदं
संतिं तओ नेमिजिणं मुणिंदं,
पासं पयासं सुगुणिक्कठाणं,
भत्तीइ वंदे सिरि-वद्धमाणं................ 1
अपार संसार समुद्दपारं,
पत्ता सिवं दिंतु सुइक्कसारं,
सव्वे जिणींदा सुरविंदवंदा,
कल्लाण-वल्लीण-विसाल कंदा...........2
निव्वाण-मग्गे वर-जाण-कप्पं,
पणासिया सेस कुवाइ-दप्पं
मयं जिणाणं सरणं बुहाणं,
नमामि निच्चं तिजगप्पहाणं, ...3
कुंदिंदु-गोक्खीर-तुसार-वन्ना,
सरोज-हत्था-कमले-निसन्ना,
वाएसिरी पुत्थय-वग्ग-हत्था,
सुहाय सा अम्ह सया पसत्था...............4

C- विधि विभाग

1. चैत्यवंदन विधि

(चैत्यवंदन यह भाव पूजा है, अतः इसके प्रारम्भ में तीन बार निसीहि बोलनी चाहिए।)

1. सबसे पहले खमासमण सूत्र बोलकर एक खमासमण देना
2. फिर नीचे के सूत्र खडे रहकर बोलना-
   इरियावहियं सूत्र, तस्स उत्तरी करणेणं सूत्र, अन्नत्थ ऊससिएणं सूत्र
3. इसके बाद "एक लोगस्स न आवे तो चार नवकार का काउस्सग्ग करके हाथ जोड़कर लोगस्स सूत्र बोलना।
4. फिर खमासमण सूत्र अलग अलग तीन बार बोलकर तीन खमासमण देकर बाद में यह आदेश मांगना
5. इच्छाकारेण संदिसह भगवान ! चैत्यवंदन करूं? इच्छं (कहकर (स्मजि) बाया पैर खडा करके बैठकर नीचे का सूत्र हाथ जोडकर बोलना)
6. सकलकुशलवत्ली पुष्करावर्तमेघो, दुरिततिमिर भानुः कल्पवृक्षोपमानः भवजलनिधिपोतः सर्वसंपत्तिहेतुः, स भवतु सततं वः श्रेयसे शांतिनाथः श्रेयसे पार्श्वनाथः।।
7. फिर चैत्यवंदन बोलना (हो सके वहां तक मूलनायक भगवान का चैत्यवंदन बोलना)
8. फिर जंकिंचि सूत्र, नमुत्थुणं (शक्रस्तव) सूत्र बोलना
9. फिर ललाट पर दोनो हाथ जोडकर जावंति चेइयाइं सूत्र बोलना
10. फिर खमासमण देकर ललाट पर दोनो हाथ जोडकर जावंत केवि साहू सूत्र बोलना
11. फिर नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व साधुभ्य बोलकर स्तवन बोलना (न आवे तो उवसग्गहरं सूत्र बोलना)
12. फिर ललाट पर दोनों हाथ जोडकर जयवीयराय सूत्र बोलना।
13. बाद में खड़े होकर श्री अरिहंतचेइयाइं सूत्र बोलना।

13. बाद में खड़े होकर श्री अरिहंत चेइयाणं सूत्र बोलना।

14. फिर अन्नत्थ सूत्र बोलना, बाद में एक नवकार का काउस्सग्ग करके नमोऽर्हत्. बोलकर स्तुति बोलना।

15. बाद में एक खमासमण देकर पच्चक्खाण का आदेश मांगना - इच्छकारी भगवान पसाय करी पच्चक्खाण नो आदेश देजोजी। (फिर यथाशक्ति पच्चक्खाण करना)

16. फिर आव्यो शरणे तुमारे... इत्यादि स्तुति बोलकर परमात्मा को मोती अथवा चावल से वधाणा चाहिए।

17. फिर एक खमासमण देकर दांया हाथ जमीन पर एवं बांया हाथ मुंह के पास रखकर निम्न वाक्य बोलना विधि करता जो कुछ अविधि, आशातना हुयी हो, उसके लिए मन, वचन, काया से मिच्छामि दुक्कडं।

18. अंत में जिनशासन देव की जय हो ऐसा बोलना चाहिए।

दोहे

ज्ञान कलश भर आत्मा, समता रस भरपूर
श्री जिन ने नहवरावता, कर्म धाए चकचूर।
मेरूशिखर नहवरावे होसुर पति, मेरूशिखर नहवरावे,
जन्मकाल जिनवर जी को जानी, पंचरूप करी आवे।

1. जल पूजा

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व-साधुभ्यः
गंगा नदी फुनि तीर्थ-जल से कनकमय कलशे भरी।
निज शुद्ध भावे विमल थावे न्हवन जिनवर को करी।
भव-पाप-ताप निवारणी प्रभु-पूजना जग हितकारी,
करूं विमल आत्म कारणे व्यवहार निश्चय मन धरी॥

मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा।

2. चन्दन पूजा

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व-साधुभ्यः
सरस चन्दन घसिय केसर भेली मांही बरास को,
नव प्रंग जिनवर पूजते भवि पूरते निज आस को।
भव पाप-ताप निवारणी प्रभु पूजा जग हितकारी,
करूं विमल आतम कारणे, व्यवहार निश्चय मन धरी॥

मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय चन्दनं यजामहे स्वाहा।

3. पुष्प पूजा

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व-साधुभ्यः

सुरभि अखंडित कुसुम मोगरा आदि से प्रभु कीजिये,
पूजा करी शुभ योग तिग-गति पंचमी फल लीजिये ।
भव-पाप-ताप निवारणी प्रभु-पूजना जग हितकारी,
करूं विमल आतम कारणे व्यवहार निश्चय मन धरी ।।

मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय पुष्पानि यजामहे स्वाहा।

4. धूप पूजा

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व-साधुभ्यः

दशांग धूप धुखाय के भवि धूप पूजा से लिये,
फल ऊर्द्धगति सम धूप दही निज पाप भव-भव के किये ।
भव-पाप-ताप निवारणी प्रभु पूजना जग हितकारी,
करूं विमल आतम कारणे व्यवहार निश्चय मन धरी ।

मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय धूपं यजामहे स्वाहा।

5. दीप पूजा

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व-साधुभ्यः

जिम दीप के प्रकाश से तम चोर नासे जानिये,
तिम भाव दीपक नाण से अज्ञान नास वखानिये।
भव-पाप-ताप निवारणी प्रभु पूजना जग हितकारी,
करूं विमल आतम कारणे व्यवहार निश्चय मन धरी ।

मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय दीपं यजामहे स्वाहा।

6. अक्षत पूजा

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व-साधुभ्यः

शुभ द्रव्य अक्षत पूजना, स्वस्तिक सार बनाइये, गति चार चूरण भावना
भवि भाव से मन भाइये। भव-पाप-ताप निवारणी, प्रभु पूजना
जग हितकरी, करूं विमल आतम कारणे, व्यवहार निश्चय मन धरी ॥

मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय अक्षतान् यजामहे
स्वाहा।

7. नैवेद्य पूजा

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व-साधुभ्यः

सरस मोदक आदि से, भरी थाली जिन पुर धारिये, निर्वेद गुणधारी मने
निज भावना जनि वारिये। भव-पाप-ताप निवारणी, प्रभु पूजना जग हितकरी,
करूं विमल आतम कारणे,व्यहार निश्चय मन धरी।

मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय नैवेद्यं यजामहे
स्वाहा।

8. फल पूजा

नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व-साधुभ्यः

फल पूर्ण लेने के लिए, फल पूजना जिन कीजिये, पण इन्द्रि-दामी कर्म-वामी
शाश्वता पद लीजिये। भव-पाप-ताप निवारणी, प्रभु पूजना जग हितकरी
करूं विमल आतम कारणे, व्यवहार निश्चय मन धरी ॥

मन्त्र-ॐ ह्रीं श्रीं परमपुरुषाय परमेश्वराय
जन्म-जरा-मृत्यु निवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय फलानि यजामहे स्वाहा।

संतिकरं-स्तवन

संतिकरं-स्तवन (तृतीयं स्मरणम्)

संतिकरं संतिजिणं, जग-सरणं जय-सिरीइ दायारं।
समरामि भत्त-पालग-निव्वाणी-गरुड-कय-सेवं।।१॥

ॐ सनमो विप्पोसहि-पत्ताणं संति-सामि-पायाणं।
झ्रौं-स्वाहा-मंतेणं, सव्वासिव-दुरिअ-हरणाणं।। २॥

ॐ संति-नुमक्कारो, खेलोसहिमाइ-लद्धि-पत्ताणं।
सौं ह्रीं नमो सव्वोसहि-पत्ताणं च देइ सिरिं।। ३॥

वाणी-तिहुअण-सामिणि-सिरिदेवी जक्खराय-गणिपिडगा।
गह-दिसिपाल-सुरिंदा, सया वि रक्खंतु जिणभत्ते।।४॥

1 2 3
रक्खंतु मम रोहिणी, पन्नत्ती वज्जसिंखला य सया।
4 5 6 7 8
वज्जंकुसि - चक्केसरि - नरदत्ता - कालि-महाकाली ॥५।।
9 10 11 12 13
गोरी तह गंधारी, महजाला माणवी अ वइरुट्टा।
14 15 16
अच्छुत्ता माणसिआ, महामाणसिआओ देवीओ।। ६॥

1 2 3 4 5 6
जक्खा गोमुह-महजक्ख-तिमुह-जक्खेस-तुंबरु-कुसुमो।
7 8 9 10 11 12
मायंगो-विजय-अजिआ, बंभो मणुओ सुरकुमारो ॥७॥
13 14 15 16 17 18
छम्मुह पयाल किन्नर, गरुडो गंधव्व तह य जक्खिंदो।

संतिकरं-स्तवन

19 20 21 22 23 24

कूबर-वरुणो भिउडी, गोमेहो पास - मायंगो ॥८ ॥

1 2 3 4 5 6

देवीओ चक्केसरी-अजिआ-दुरिआरि-काली-महाकाली।

6 7 8 9 10 11

अच्चुअ-संता-जाला, सुतारयाऽसोय सिरिवच्छा । ।९ ॥

12 13 14 15 16 17 18

चंडा-विजयंकुसि-पन्नइत्ति-निव्वाणि-अच्चुआ धरणी।

वइरुट्ट - दत्त-गंधारि-अंब-पउमावई सिद्धा । ।१० ॥

इअ तित्थ-रक्खण-रया, अन्ने वि सुरा सुरी य चउहा वि।

वंतर-जोइणि-पमुहा, कुणंतु रक्खं सया अम्हं । । ११ ॥

एवं सुदिट्ठि-सुरगण-सहिओ संघस्स संति जिणचंदो।

मज्झ वि करेउ रक्खं, मुणिसुन्दर-सूरि-थुअ-महिमा । । १२ ॥

इअ संतिनाह-सम्मदिट्ठी-रक्खं सरइ तिकालं जो ।

सव्वोवद्दव-रहिओ, स लहइ सुह-संपयं परमं । । १३ ॥

जैन भूगोल

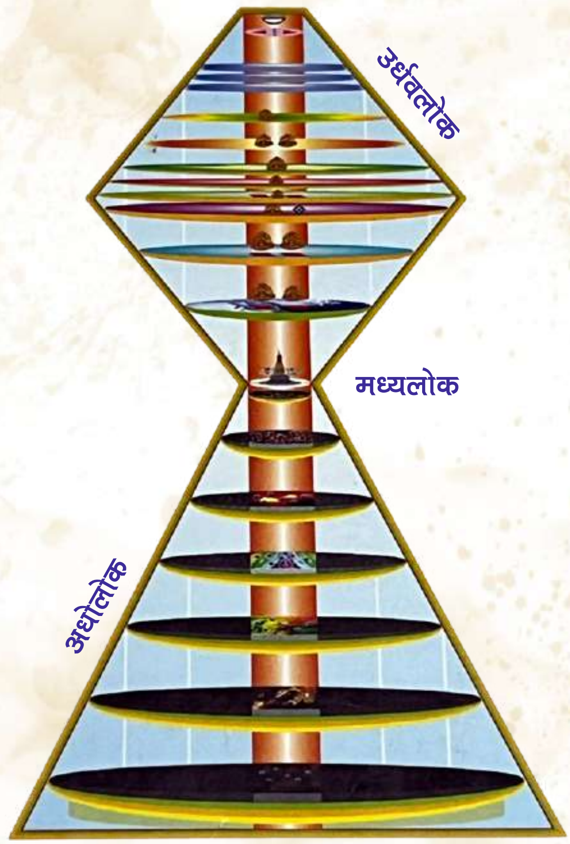

प्रश्न : लोक किसे कहते हैं ?
उत्तर : जीव और पुदगल (Matter) जहां रहते हैं उसे लोक कहते हैं।

प्रश्न : लोक के कितने विभाग हैं ?
उत्तर : लोक के मुख्य तीन विभाग हैं अधोलोक, मध्यलोक, उर्ध्वलोक।

प्रश्न : अधोलोक की लम्बाई कितनी है ?
उत्तर : 7 राजलोक से कुछ अधिक।

प्रश्न : मध्यलोक की लम्बाई कितनी हैं ?
उत्तर : 1800 योजन।

प्रश्न : उर्ध्वलोक की लम्बाई कितनी है ?
उत्तर : 7 राजलोक से कुछ कम।

प्रश्न : लोक में जीव कहां पर रहते हैं ?
उत्तर : स्थावर जीव तो पूरे 14 राजलोक में रहते हैं। परन्तु त्रस जीव त्रसनाल में रहते हैं।

स्थावर जीव : जो अपनी इच्छा हलन चलन नहीं कर सकते।
(पेड़, पौधे, पानी, हवा और अग्नि के जीव)

त्रस जीव : जो अपनी इच्छा से चल फिर सकते हैं (दो इन्द्रिय से पांच इन्द्रिय)

प्रश्न : त्रसनाल कहां पर है?
उत्तर : त्रसनाल लोक क ठीक मध्य में है, यह 14 राजलोक लम्बी और 1 राजलोक व्यास (Diameter) वाली सिलेंडर के आकार की नली है

श्री महावीर स्वामी जिन चैत्यवंदन

सिद्धारथ सुत वंदीये, त्रिशालानो जायो,
क्षत्रिय कुंडमां, अवतर्यो, सुर-नर-पति गायो
मृगपति लंछन पउले, सात हाथनी काय,
बहांतर वरसुनं, आउरवुं, वीर जिनेश्वर राय
क्षमाविजय जिनराजनो, उत्तम गुण अवदात,
सात बोलथी वर्णव्यो, पदम्‌विजय विख्यात

श्री महावीर स्वामी जिन स्तुति

जय जय भवि हितकर, वीर जिनेश्वर देव, सुरनरनां नायक, जेहनी सारे सेव।
करुणा रस कंदो, वंदो आणंद आणी, त्रिशला सुत सुंदर, गुण मणि के रो खाणी
जस पंच कल्याणक, दिवस विशेष सुहावे, पण थावर नारक, तेहने पण सुख थावे।
ते च्यवन जन्म व्रत, नाण अने निर्वाण, सवि जिनवर केरा, ए पांचे अहिठाण
जिहां पंच समिति युत, पंच महाव्रत सार, जेहमां परकाश्या, वली पांचे व्यवहार।
परमेष्ठि अरिहंत, नाथ सर्वज्ञने पार, एह पंच पदे लहयो, आगम अर्थ उदार
मातंग सिद्धाइ, देवी जिनपद सेवी, दुःख दुरित उपद्रव, जे टाले नित मेवी।
शासन सुखदायी, आइ सुणो अरदास, श्री ज्ञान विमल गुण, पूरो वांछित आश

श्री महावीर स्वामी जिन स्तवन

दीन दु:खियानो तु छे बेली तु छे तारणहार
तारा महिमानो नहीं पार
राजपाट ने वैभव छोड़ी, छोड़ी दीधो संसार
तारा महिमानो........... ॥ 1 ॥

चंडकीशयो डसीयो ज्यारे, दूधनी धारा पगथी निकले
विषने बदले दुध ने जोईने, चंड कोशियो आव्यो शरणे
चंडकोशिया ने तें तारी, कीधो घणो उपकार,
तारा महिमानो........... ॥ 2 ॥

कानमा खीला ठोक्या ज्यारे, थई वेदना प्रभु ने भारे
तो अे प्रभुजी शांत विचारे, गोवालनी नहीं वांक लगारे
क्षमा आपीने ते जीवोने, तारी दीधो संसार,
तारा महिमानो........... ॥ 3 ॥

महावीर महावीर गौतम पुकारे, आंखों थी आंसु नी धारा अहावे
क्यां गया एकला मूकी मुजने, हवे नथी कोई जगमां मारे
पश्चाताप करतां-करतां, उपन्युं केवल ज्ञान,
तारा महिमानो........... ॥ 4 ॥

ज्ञान विमल गुरू वयणे आजे, गुण तमारा भावे गावे
थई सुकानी तुं प्रभु आवे, भवजल नैया पार लगावे
अरज अमारी उरमां धारी, वंदु वारंवार,

तारा महिमानो.......... ॥ 5 ॥

महावीर प्रभु (जीवन) अमर कुमार

बरसो पहले राजगृही नामक राज्य में महाराजा श्रेणिक राज करते थे। उनके राज्य की प्रतिष्ठा दूर-दूर तक फेली थी। राजा श्रेणिक खूब दयावान और साथ-साथ कला प्रेमी भी थे। उनके राज्य में संगीत, नृत्य, हस्तकला, शिल्पकला, चित्रकला... ऐसी विविध कलाओं के एक से बढ़कर एक कलाकार थे।

एक बार उन्हें विचार आया कि क्यों ना एक विशाल महल की रचना की जाए और उसमें राज्य की श्रेष्ठ कलाकृतियों को स्थाान दिया जाए। फिर क्या... इस विचार पर अमल करते हुए, श्रेणिक महाराजा ने अपने होनहार कलाकारों को एकत्रित किया और अपनी इच्छा प्रगट करते हुए महल बनाने की घोषणा की। देखते ही देखते इन कलाकारों ने अपने अनुभव और कुशलता से इस उत्तम रचना को साकार किया।

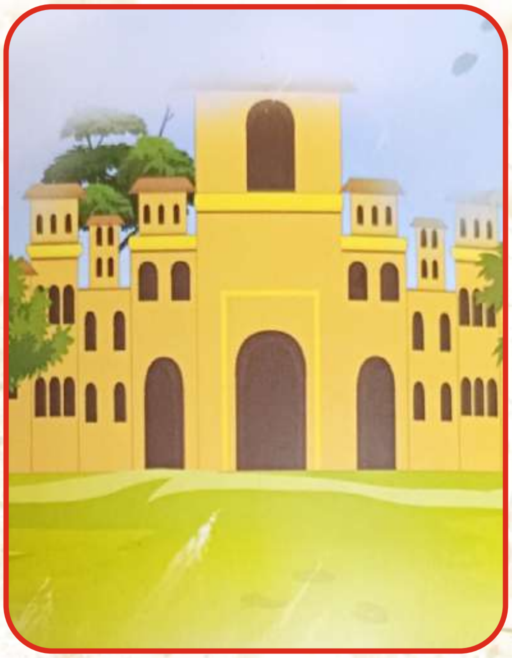

महावीर प्रभु (जीवन) अमर कुमार

मगर ना जानें क्यों इस बेनमून कलाकारी से बने महल की एक दीवार टूट गई। इतना ही नहीं जितनी बार उसे वापिस बनाने की कोशिश की जाती, वह दीवार टूट ही जाती थी। यह अब सब की चिंता का विषय बन चुका था। जब महाराजा श्रेणिक को इस बात की खबर हुई, तो वह भी बड़े चिंतित हुए। उन्होंने तो इस महल का निर्माण करने के लिए सबसे श्रेष्ठ सामग्री का उपयोग करवाया था।

महाराज ने इस समस्या के समाधान के लिए अपने राज्य के राज पंडित को बुलवाया ।पंडित ने राजा से कहा कि कोई असुरी शक्ति इस काम को रोक रही है। खेद के साथ बताया कि कोई बत्तीस लक्षण वाले बालक का अग्नि बलिदान दें तो हल निकल सकता है। राजा ने राज्य में घोषणा करवाई, जो कोई बत्तीस लक्षण वाले बालक का बलिदान देने के लिए तैयार हो, उन्हें उस बालक के वजन जितने सोने क सिक्के का पुरस्कार दिया जाएगा।

इसी राज्य के गांव में एक ब्राह्मण ऋषभदास और उसकी पत्नी भद्रा के चार बच्चे रहते थे। वे इतने गरीब थे कि उन्हें दो वक्त की रोटी भी नसीब नहीं हो पाती थी। राजा की घोषणा सुनने के बाद उन्होंने अपनी गरीबी दूर करने के लिए अपने सबसे छोटे बच्चे का बलिदान देने का निश्चय किया। जिसका नाम था, अमर कुमार

राज्य के राज सिपाहियों को बुलाया गया और वे अमर कुमार को ले गये। बहुत जल्द अमर कुमार यह समझ चुका था कि उसे मार दिया जाएगा। उसने अपनी जिंदगी की भीख मांगते हुए बहुत विंनती की। मगर उसकी सारी विंनती बेकार गई।

महावीर प्रभु (जीवन) अमर कुमार

सिपाही अमर कुमार को राजा के पास ले आए। अमर कुमार ने बहुत विंनती की, मगर राजा बेबस था। राजा श्रेणिक खुद भी उदास थे। मगर उनकी महल बनाने की जिज्ञासा के सामने इस बच्चे का अग्नि बलिदान कुछ भी नहीं था। अमर कुमार को बहुत दुःख हुआ जब उसे पता चला कि खुद महाराज भी उसकी सहायता नहीं कर सकते।

अंत में उसे एक जैन साधु भगवंत की बात याद आ गई। मुनि भगवंत ने उससे कहा था कि मुश्किल वक्त में दिल से नवकार मंत्र का जाप करना चाहिए। अमर कुमार को वहां लाया गया जहां उसका अग्नि बलिदान किया जानेवाला था।

उसे लकड़ी के ढेर पर बिठाया गया। अमर कुमार ने अपनी आंखे बंद की, हाथ जोड़े और हृदयपूर्वक 'नवकार मंत्र' का जाप शुरू कर दिया। एक ओर इस अग्निचिता को आग लगाई गई और दूसरी ओर अमर कुमार का नवकार महामंत्र का जाप गूंजने लगा। उसे नवकार मंत्र पर पूरा भरोसा था।

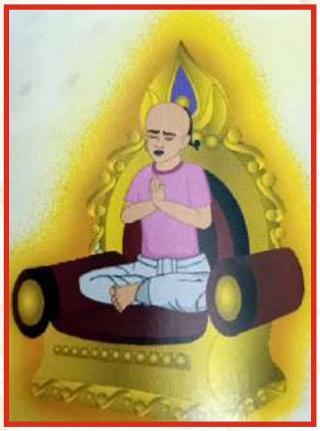

क्षण भर में वहां चमत्कार हुआ। नवकार मंत्र के प्रभाव और अमर कुमार की श्रद्धा से लकड़ी की चिता एक खूबसूरत सिंहासन में बदल गई। महाराजा श्रेणिक, राज पंडित और उपस्थित सभी अचंबित हो गए। इस चमत्कार के बाद महाराजा नपे अमर कुमार से इस शक्ति के बारे में पूछा। तब अमर - कुमार ने कहा कि यह सिर्फ और सिर्फ नवकार महामंत्र के प्रति उसका अटल विश्वास था, जिसने उसे बचा लिया।हर कोई उस महल के बारे में भूल गया। और नवकार मंत्र का जय जयकार चारों ओर गूंजने लगा।

सीख : यह बात हमारे अंदर कायम रहनी चाहिए कि चमत्कार की आशा से नवकार मंत्र का जाप नहीं करना है। परंतु सच्ची श्रद्धा से नवकार जाप करेंगे तो चमत्कार होने से कोई रोक नहीं सकता।

गुरु वल्लभ भजन

श्री वल्लभ गुरू के चरणों में, मैं नित उठ शीश नवाता हूं।

मेरे मन की कली खिल जाती है, जब दर्श तुम्हारा पाता हूं।

मुझे वल्लभ नाम ही प्यारा है, इस ही का मुझे सहारा है।

इस नाम में ऐसी बरकत है, जो चाहता हूं सो पाता हूं।

जब याद तेरे गुण आते हैं, दु:ख दर्द सभी मिट जाते हैं।

मैं बनकर मस्त दीवाना फिर, बस गीत तेरे ही गाता हूं।

गुरू-राज तपस्वी महामुनि, सरताज थे तुम महाराजों के।

मैं इक छोटा सा सेवक हूं, कुछ कहता हूं शर्माता हूं।

गुरू-चरणों में है अर्ज यही, बढ़ती दिन रात रहे भक्ति।

मेरा मानुष जन्म सफल होवे, यही भक्ति का फल चाहता हूं।